संयुक्तांक मार्च 2025 • मूल्य : 200 रुपए वर्ष 16 ISSN 2347-6613

# परिंदे

साहित्य, संस्कृति एवं विचार का द्वैमासिक

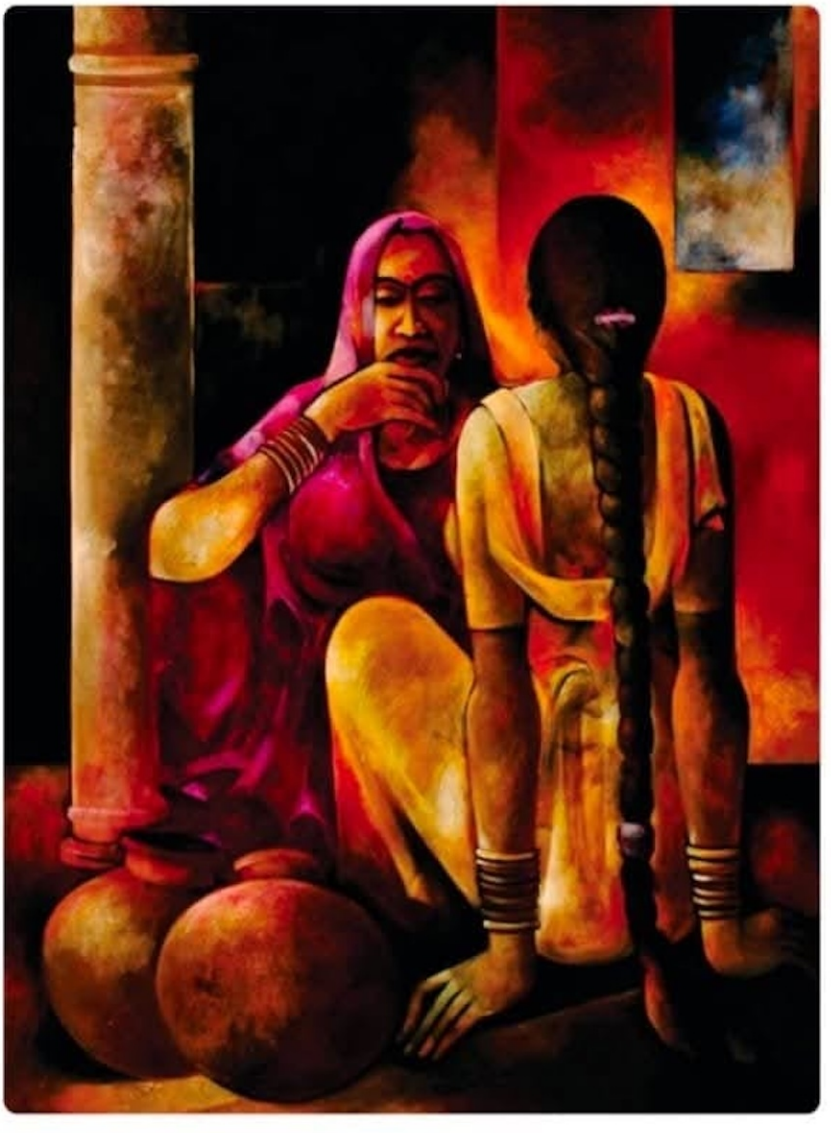

## भारतीय साहित्य पर केंद्रित अंक

# परिंदे

साहित्य, संस्कृति एवं विचार का द्वैमासिक

**वर्ष 16 • अंक-5+6 • संयुक्तांक दिसंबर-मार्च 2025**



संरक्षक

**पंकज बिष्ट, अरविंद मोहन, डॉ. विनोद कुमार सिन्हा**

संपादक

**डॉ. शिवदान सिंह भदौरिया**

कार्यकारी संपादक

**श्रीविलास सिंह**

प्रबंध संपादक

**ठाकुर प्रसाद चौबे**

परामर्श संपादक एवं सहयोग

**ज्योति स्वरूप शुक्ल, डॉ. पूनम सिंह, रघुवीर शर्मा**

कानूनी एवम् वित्तीय सलाहकार

**सिद्धार्थ सिंह** (अधिवक्ता), **महेन्द्र तेवतिया** (सी.ए.)

शब्द संयोजन

**प्रियांशु**

ग्राफिक स्टुडियो

**अमित कुमार सोलंकी**



***संपादकीय संपर्क एवं कार्यालय:***

**79 ए, दिलशाद गार्डन, नियर पोस्ट ऑफिस, दिल्ली- 110095**

**मो. 09810636082**

**E-mail: officeparindepatrika@gmail.com, E-mail: parindepatrika@gmail.com**



इस अंक का मूल्य: **200** रु. (एक प्रति), वार्षिक: **600** रु. संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक: **800** रु. वार्षिक (विदेश): **50** यू.एस.डॉलर, आजीवन व्यक्तिगत: **5000** रु. संस्था: **6000** रु.

**बैंक के माध्यम से शुल्क भेजने के लिए**

परिंदे पत्रिका का खाता 'पंजाब एंड सिंध बैंक' दिल्ली मे हैं। खाता का नाम-परिंदे (Parinde) है एवं खाता संख्या-04801100049782 है तथा इसका आई.एफ.सी कोड *PSIB0000484* है।

***संपादन-संचालन पूर्णत: अवैतनिक एवं अव्यवसायिक***



'परिंदे' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं। ♦ **'परिंदे'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।


**आवरण चित्र:** प्रसिद्ध समकालीन चित्रकार डॉ लाल रत्नाकर की पेंटिंग है। 12 अगस्त, 1957 को जौनपुर, उ. प्र. के एक गांव में जन्में लाल रत्नाकर जी गाजियाबाद शहर के एम एम एच कालेज में चित्रकला के प्रोफेसर और विभाग प्रमुख रहे। उनके चित्रों में महिलाओं, और विशेषत: ग्रामीण महिलाओं के रोज़मर्रा के जीवन की अनेक छवियां मिलती हैं और एक उदासी सी महसूस होती है। उनके चित्र वास्तविकता लिए हुए होते हैं और उनमें संवेदना की एक अंतर्धारा सी महसूस होती है।

परिंदे
साहित्य, संस्कृति एवं विचार का द्वैमासिक
**वर्ष 16 • अंक-5+6 • संयुक्तांक दिसंबर-मार्च 2025**

# अनुक्रम

**संपादकीय**

5. बदलता विश्व परिदृश्य और आधुनिक साहित्य: **डॉ. शिवदान सिंह भदौरिया**

**साक्षात्कार**

7. मराठी कवि लेखक तथा समीक्षक **डॉ पृथ्वीराज तौर** से **डॉ पुरुषोत्तम कुंदे** की बातचीत
53. असमिया की प्रख्यात कथाकार **रुमी लस्कर ब'रा** से **विजय कुमार यादव** की बातचीत

**आलेख**

80. समाज साहित्य और सिनेमा का तिलिस्म: **अंजनी आर श्रीवास्तव**
119. राजस्थानी कविता के पर्याय मोहन आलोक: **डॉ. नीरज दइया**
122. तुलसी का रूढ़िवाद: शूद्र और नारी के प्रति तुलसी की संकुचित दृष्टि का यथार्थ: **कमला कान्त त्रिपाठी**

**कहानियाँ**

15. दगडू मामा: **उत्तम कांबले** (मराठी)
20. अभिशाप: **सलमा** (तमिल)
28. पृथ्वी की आयु: **अमर मित्र** (बांग्ला)
35. नारी कवि: **पारमिता शतपथी** (ओड़िया)
40. गंध: **पन्ना त्रिवेदी** (गुजराती)
45. एक युवक की तलाश में: **रूमी लस्कर ब'रा** (असमिया)
59 मल कुल माओ: **वसीम अहमद अलीमी** (उर्दू)
62. जीरो: **डॉ. रवि प्रकाश टेकचंदाणी** (सिंधी)
68. परछाइयों का मोह: **रामसरुप अणखी** (पंजाबी)
71. अपराजित: **पद्मश्री शानु लामा** (नेपाली)
76. माँ से सुने आठ झूठ: **ए. आर मणिकांत** (कन्नड़)
78. वारिस: **प्रो ललित मंगोत्रा** (डोगरी)
102. उड़ान: **माया खरंगटे** (कोंकणी)
105. यह इम्फाल की कथा है: **ओबीरेन** (मणिपुरी)
108. बावरी बात: **अख्तर मुहीउद्दीन** (कश्मीरी)
112. तुम मुझसे प्यार करती हो: **जैश्री बोरो** (बोडो)
114. नेयपायसम: **माधविक्कुट्टी** (मलयालम)
116. आधे रुपए का कर्ज: **यद्दनपोडी सुलोचना राणी** (तेलुगु)
131. मोको कहाँ ढूँढे: **श्रद्धा श्रीवास्तव**

**कविताएँ**

33. **अमृता प्रीतम**
64. **सुकान्त भट्टाचार्य**
65. **नवारुण भट्टाचार्य**
66. **काजी नजरुल इस्लाम**
67. **जीवनानंद दास**
100. **सिद्धलिंगय्या जी**
110. **डॉ. नीरज दइया**
118. **नामदेव कोळी**
130. **स्वाति शर्मा**

**लघुकथाएँ**

34. धन्धा: **अबुल्लिस ओलिप्पुड़ा** (मलयालम)
70. खामोशी का दर्द: **दर्शन सिंह बरेटा** (पंजाबी)
101. असहनीय शोर: **भामिडि पाटि रामगोपालम** (तेलुगु)
111. बराबरी: **मुंडूर कृष्णन कुट्टी** (मलयालम)
117. उखड़ते पेड़: **डॉ. रामकुमार घोटड़** (राजस्थानी)
127. मरघट की दास्तान: **नासिर मंसूर** (कश्मीरी)

**धारावाहिक विश्व उपन्यास**

128. ऑक्टेवियो पाज और द मंकी ग्रैमेरियन: **डॉ. बिनोद सिन्हा**

# बदलता विश्व परिदृश्य और आधुनिक साहित्य

आधुनिक विश्व परिदृष्य एक 'ग्लोबल विलेज' सा हो गया है, जिसमें इंटरनेट और अन्य इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यमों द्वारा हरेक इकाई दूसरी इकाई से जुड़ी है। ये जुड़ाव केवल सूचनाओं और विचारों के आदान-प्रदान तक सीमित नहीं हैं, आर्थिक और भौतिक गतिविधियाँ अपने पुराने स्वरूप से क्रांतिकारी रुप से भिन्न हो चुकी हैं। विविध सोशल साइट्स, टीवी चैनल, वेब साइट्स, मोबाइल नेटवर्क्स के माध्यम से लोग विविध विचारों, संदेशों, कहानियों, साहित्यक कृतियों और वीडियो पोस्ट का आदान-प्रदान अत्यल्प समयावधि में कर रहे हैं। विचारों का शीघ्र संचार विविध समुदायों में न केवल कुछ मुद्दों में आम राय बनाने और विकसित करने में सहायक साबित हुआ है बल्कि समाज अलग-अलग तरह के विरोधी विचारों के कई धड़ों में तेजी से विभाजित भी हुआ है। इन शीघ्र परिवर्तनों ने एकीकरण और विघटन की प्रक्रिया को तीव्रतर कर दिया है। उत्पादन, परिवहन और दूरसंचार के क्षेत्र में तकनीकी प्रगति ने विविध आर्थिक गतिविधियों को अत्यंत सहज, सरल और तीव्र बना दिया है। मानव-जीवन नवीन मीडिया-पारिस्थितिकी के विविध प्रभावों से अत्यंत जटिल रूप में विनिर्मित हो रहा है और नये सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्वरुप बन रहे हैं। विचार-प्रवाह की तीव्रता राजनीतिक विचार-विमर्श को प्रभावित कर रही है, लोक-विमर्श के कारण लोकतांत्रिक प्रक्रिया परिपुष्ट हो रही है। संचार क्रान्ति ने नये तरह के तकनीकी कौशल की आवश्यकता उत्पन्न की है, स्टोरेज के स्वरुप बदल दिये हैं और बहुत तरह की आर्थिक, व्यावसायिक और उत्पादन प्रक्रियाओं में आर्टीफिसियल इंटेलीजेंस और मशीन लर्निंग का प्रवेश हो गया है, जिससे बहुत से आर्थिक क्रिया-कलाप अप्रासंगिक हो गये हैं।

आधुनिक युग, भोग की विविध सामग्रियों से परिपूर्ण है, विश्व जनसंख्या 8 अरब से ज्यादा हो चुकी है और विज्ञान ने विविध प्रकार की भौतिक सुख सुविधायें उपलब्ध करायी हैं लेकिन ऊर्जा, उत्पादन और निर्माण-विनिर्माण के क्रिया कलाप पर्यावरण का संतुलन प्रभावित कर रहे हैं और वैश्विक ताप में लगातार अभिवृद्धि हो रही है। कोरोना जैसी विविध प्रकार की बीमारियाँ बढ़ी हैं, समुद्र का जल-स्तर ऊपर उठ रहा है और विभिन्न ग्लेशियर पिघल रहे हैं। निकट भविष्य में विश्व की सबसे बड़ी चुनौती है पर्यावरण-प्रदूषण और उसकी उपेक्षा समस्त मानव जाति के महाविनाश का कारण बन सकती है।

जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) के प्रयोग से उत्पादन, व्यवसाय और वित्तीय प्रक्रियाओं के प्रबंधन में निरंतर कार्यकुशलता और सटीकता बढ़ रही है और रणनीतिक निर्णय लेने में शीघ्रता हो रही है। नौकरी और रोजगार के स्थान पर बिजनिस और बाजार ज्यादा महत्वपूर्ण हो रहे हैं और इन वैश्विक परिवर्तनों से भारत अछूता नहीं है। इक्कीसवीं सदी के आरंभिक दशक तक विभिन्न आर्थिक महाशक्तियों नें वैश्वीकरण और बाजार के खुलेपन को आगे बढ़ाया और उपनिवेश काल की स्मृतियों को भुलाकर विविध विकासशील देशों नें बाजार के वैश्वीकरण में पुरजोर हिस्सा लिया। लेकिन पिछले दशक में ब्रेक्सिट जैसी घटनायें और विभिन्न देशों में दक्षिणपंथी शक्तियों का उभार आर्थिक विचारकों को ये सोचने पर मजबूर कर रहा है कि हमें वैश्विक एकीकरण की प्रक्रिया के साथ-साथ समाज के विभिन्न वर्गों को साथ लेकर चलने की आवश्यकता है।

बीसवीं सदी में मानव सभ्यता दो विश्व-युद्धों की विभीषिका झेल चुकी थी फिर भी कोल्ड वार, ईराक-कुवैत, भारत-पाकिस्तान, रूस-यूक्रेन और इजराइल-फिलिस्तीन और तालिबान-अफगानिस्तान की घटनायें ये दर्शाती हैं कि विभिन्न देश-समाज आज भी शांति और सह-अस्तित्व के आदर्शों तक पहुँचने में विफल रहे हैं। आतंकवाद, जन-विनाशक आयुध और नाभिकीय हथियारों के जखीरे, सम्पूर्ण मानवीय सभ्यता के अस्तित्व के सम्मुख गम्भीर चुनौती प्रस्तुत करते हैं।